e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 12, December 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

गोस्वामी तुलसीदास की प्रासंगिकता

Dr. Rita Pandey

Associate Professor, Dept. of Hindi, V.S.S.D. College, Kanpur, Uttar Pradesh, India

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल की सगुण भक्ति के राम काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में जाने जाते हैं। वे प्रकाण्ड विद्वान, उच्च कोटि के रचनाकार, परम भक्त, दर्शन और धर्म के सूक्ष्म व्याख्याता, सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिष्ठाता, बहुभाषाविद्, आदर्शवादी भविष्यद्दृष्टा, विश्व-प्रेम के पोषक, भारतीयता के संरक्षक, लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण तथा अद्भुत समन्वयकारी थे। आलोचक रमेश कुंतल मेघ की वस्तुनिष्ठ टिप्पणी तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व को रेखांकित करती है- "जब वे समाज के पूरे रंगमंच को देखते-देखते तथा भोगते-भोगते यथार्थवादी एवं व्यावहारिक भी हो जाते हैं (दोहावली, कवितावली, हनुमानबाहुकादि) तब वे कलिकाल की गर्दन मरोड़ देते हैं। अपने जीवन के परवर्ती चरण में तुलसी आध्यात्मिक और स्वप्नद्रष्टा के बजाय धार्मिक और यथार्थ द्रष्टा हुए हैं। उन्होंने अंतत: घोषित ही किया की सारे समाज तंत्र का आधार 'पेट' अर्थात् आर्थिक शक्ति है (कवितावली)। यह उनके समाज दर्शन की महत्तम सिद्धि है जो उन्हें कबीर तक से बहुत आगे ले जा सकती है। आर्थिक दरिद्रता को इतना भोगने-समझने वाला मनुष्य, दरिद्रता के सामाजिक परिणामों को इतना सटीक विश्लेषित करने वाला समाज-पुरुष और दरिद्रता से इतनी प्रगाढ़ नफरत करने वाला लोककवि, तुलसी के अलावा कोई नहीं है।"

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ने तुलसीदास कृत ग्रंथों को उल्लेख किया है, वे निम्नलिखित हैं- १. रामचरितमानस २. रामललानहछू ३. वैराग्य-संदीपनी ४. बरवै रामायण ५. पार्वती-मंगल ६. जानकी-मंगल ७. रामाज्ञाप्रश्न ८. दोहावली ९. कवितावली १०. गीतावली ११. श्रीकृष्ण-गीतावली १२. विनयपत्रिका १३. सतसई १४. छंदावली रामायण १५. कुंडलिया रामायण १६. राम शलाका १७. संकट मोचन १८. करखा रामायण १९. रोला रामायण २०. झूलना २१. छप्पय रामायण २२. कवित्त रामायण २३. कलिधर्माधर्म निरुपण आदि हैं। नागरी प्रचारिणी सभा काशी, एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ रिलीजन एंड एथिक्स में ग्रियर्सन महोदय और अन्य कई विद्वानों ने उपरोक्त प्रथम बारह ग्रंथों का उल्लेख किया है और प्रमाणिक रचना माना है।

जो साहित्य हर समय प्रासंगिक हो वास्तव में वही चिरंतर, कालजयी व अमर साहित्य है। तुलसीदास की लोकप्रियता और प्रासंगिकता के केन्द्र में 'राम' हैं। उनकी भक्ति दास्य भाव की है। महाकवि तुलसीदास के रामचरितमानस सहित सभी ग्रंथों में समन्वय तथा सार्वभौम मानवता के सूत्र बिखरे पड़े हैं, जिनकी प्रासंगिकता उन दिनों भी थी आज भी है। तुलसीदास की प्रासंगिकता का सवाल साहित्य और समाज के संबंध का सवाल नहीं है। यह साहित्य की सामाजिक उपयोगिता का सवाल है। डॉ. ग्रियर्सन से लेकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रेखांकित किया है कि तुलसीदास बुद्ध के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक हैं। एक सच्चा लोकनायक ही ज्ञान और भक्ति का, शील, शक्ति और सौन्दर्य का, सगुण और निर्गुण का, व्यक्ति और समाज का, धर्म और संस्कृति का, राजा और प्रजा का, वेद और व्यवहार का, विचार और संस्कार का समन्वय कर सकता है। लोकनायक वह होता है जो समन्वय कर सके और सबको साथ लेकर चल सके।

परिचय

वर्तमान सन्दर्भ में तुलसीदास प्रासंगिकता के बारे में विचार करना ही हमारा उद्देश्य है। प्रासंगिकता का साहित्य से जोड़कर अर्थ निकाला जाए तो इसका तात्पर्य है- महिमा, महत्त्व, अस्मिता एवं अस्तित्व। तुलसीकृत साहित्य का वर्तमान में कितना महत्त्व है, यही प्रश्न विचारणिय है। विद्वानों के अनुसार तुलसी रचित ग्रंथों की संख्या में मतभेद है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा उनके ग्रंथों की कुल संख्या बारह है जिनके नाम इस प्रकार है- वैराग्य-सन्दीपनी, रामचरितमानस, बखै रामायण, रामाज्ञा-प्रश्न पार्वती मंगल, जानकी मंगल, विनयपत्रिका, कृष्ण गीतावली, राम लला नहछू, दोहावली, गीतावली एवं कवितावली। हम इन्हीं ग्रंथों की महिमा के आधार पर तुलसी के साहित्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाल सकते हैं। राम-राज्य वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व के नेताओं और जनता का सपना बना हुआ है। महात्मा गाँधी ने तुलसीकृत 'मानस' में स्थापित राम-राज्य की अवधारणा को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है। तुलसी ने ही सर्वप्रथम राम-राज्य की अवधारणा इस संसार को दी, जो राज्य अपने में पूर्ण है, वही रामराज है। तुलसी के राम-राज्य का प्रारूप :-[1,2]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

देखिएः -

‘ ‘दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहीं काहुहिं ब्यापा।।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

चारिउ चरन धर्म जग माहीं, पूरि रहा सपनेहुँ अध नाहीं।।

राम भगति रत नर अरू नारी, सकल परम गति के अधिकारी।।

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा, सब सुंदर सब बिरूज सरीरा।।

नहिं द्ररिद्र कोउ दुखी न दीना, नहिं कोउ अबुध न लच्छान हीना।।

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरू नारि चतुर सब गुनी।।

सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट समानी।।

राम राज नभगेस सुनु सचराचरा जग माहिं।।

काल कर्म सुभाव गुनकृत दुख काहुहि नाहिं।।

तुलसीदास (1532 ई से 1623 ई0) उन्हें यहाँ से गए एक युग बीत गया है परन्तु जिस राम-राज्य का समना उन्हे देखा था, वह आज भी अपूर्ण है। नेता राम-राज का सपना दिखाकर जनता से वोट ठग रहे है और जनता दुखी है। इसके बावजूद भी पूरे संसार में एक आदर्श शासन व्यवस्था कायम करने की बात की जा रही है। इस प्रकार राम-राज्य की अवधारणा में ताकत है और प्रासंगिकता उसकी बनी हुई है। मध्यकालीन भक्त कवि ‘रामचरितमानस’ तुलसीदास राम-राज की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते है कि उसके कानून-कायदें एवं शान-पद्धति प्रजा के हित में है। भगवान श्रीराम एक आदर्श शासक है और प्रजा की भलाई में सदैव प्रयासरत दिखाई देते हैं। राम अतुलनीय और गुणों की खान तुलसीदास को लगते हैं। उन्होंने सैकड़ों की संख्या में अश्वमेध यज्ञ किए है, वे चक्रवर्ती सम्राट हैं उनके रोएँ-रोएँ में न जाने कितने संसार बसे हुए हैं। प्रकृति में भी गतिशीलता श्री राम के कारण बनी हुई है। यथाः -

“भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला।।

भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू।।

सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता धनेरी।।

सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी। फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी।।

सोउ जाने कर फल यह लीला। कहहिं महा मुनिवर दमसीला।।

राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा।।

सब उदार सब पर उपकरी। बिप्रखरन सेवक नर-नारी।।

एक नारी व्रत रत सब झारी। ते मन वच क्रम पति हितकारी।।

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।

जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचन्द्र के राज।।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

राम काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि तुलसीदास व उनके साहित्य के उच्च आदर्शों को राम-राज में वर्णित समन्वय की भावना भी वर्तमान सन्दर्भ में विभिन्न धर्मों एवं जातियों के मेल-मिलाप को लेकर भी उनकी प्रासंगिकता को प्रामाणित करती हैं। कवि के अनुसार राम-राज्य में ताकतवर और दुर्बल आपस में मिल-जुलकर रहते हैं। सबकी भी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। स्नेह भावना प्रबल है, प्राकृतिक उपादान भी प्रजा के हित में हैं। दसों दिशाएं शांत और बन स्पतियाँ मानव के विकास में सलंग्न हैं। यथाः-

"फूलहिं फरहिं सदा तरू कानन। रहहिं एक साँग गज पंचानन।।

खग मृग सहज बयरू बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बुढाई।।

कूजहिं खग मृग नाना ब्रंदा। अभय चरहिं बनकर हिं आनदा।।

सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा।।

लता बिपट मांगे मधु चवहीं। मन भावतो धेतु स्रवहीं।।

ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेतां भइ कृतजुग कै करनी।।

प्रगटीं गिरिन्ह बिबिध मनि खानी। जगदातमा भूप जग जानी।।

सरिता सकल बहहिं बर-बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी।।

सागर निज मर जादाँ रहहिं। डारि रत्न तटहिं नर लहहीं।।

सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा विभाग।।

बिधु महि पूर मयूरन्हि रवि तप जेतनेहि काज।

मांगे बारिद देहिं जल रामचन्द्र के राज।। [3,4]

महात्मा तुलसीदास भगवान श्रीराम की भक्ति एवं आस्था पर गहरा विश्वास था। वे एक आस्थावान एवं आस्तिक कवि रहे हैं। उनका सोचना है कि हमें श्रीराम से ही माँगना चाहिए। इस संसार के आगे हाथ फैसला बेकार है। अहिल्या, शबरी, बिभीषण, सुग्रीव एवं मारीच जैसों का उद्धार भगवान श्रीराम ने ही किया है। उनके द्वारा मर्यादित जीवन भारतीय सभ्यता-संस्कृति में आज भी मिशाल बने हुए है देखिएः-

"जग जाचिअ कोउन, जाचिअ जौं जिय जाचिअ जानकी जानहिरो।

जेहि जाचत जाचकता जीर जाइ, जो जारति जोर जहानहि रे।

गति देखु बिचारि बिभीषनकी, अरू आनु हिएँ हनुमानहिरे।

तुलसी! भजु दारिद-दोष-दावानल संकट-कोटी-कृपानहि रे।

तुलसीदास द्वारा 'कवितावली' में स्वदेश प्रेम की भावना वर्तमान में हमें यही सन्देश देती है कि हमारे अन्दर कौमी एकता का भाव होना चाहिए। अवगुणों का त्याग करके सहनशीलता को अपनाना, दुःखों की समाप्ति हेतु राम भक्ति को समर्पित हो जाना ही मानव धर्म है। साथ ही वे समझाना चाहते है कि मनुष्य अपने कर्मों को अवश्य भोगता है।

यथा-

''भलि भारतभूमि, भलें कुल जन्मु, समाजु सरीरू भलो लहि कै।

करषा तलि कै पुरूषा बरसा हिम, मारूत, धाम सदा सहि कै।।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

जो भजै भगवान समान सोई, 'तुलसी' हठ चातकु ज्यों गहि कै।

नतु और सबै बिषबीज बए, हर हाटक कामदुहा नहि कै।।"

तुलसीदास की प्रासंगिकता इस बात में भी है कि वे मानव को सचेत करते हुए कहते हैं कि हमें कभी भी अनावश्यक विधियों से धन सम्पदा एकत्रित नहीं करनी चाहिए। ऐसे व्यक्ति जो रूपया-पैसा कमाने हेतु राम भक्ति से दूर हो गए है, अभिमानी और महामूर्ख मानते हैं। यथा-

"झूठो है झूठों है, झूठो जगु, संतक हंत जे अंतु लहा है।

तको सहै सठ! संकट कोटिक, काढ़त दंतक रंत हहा है।।

जानपनीकौ गुमान बड़ो, तुलसी के विचार गँवार महा है।

जनकी जीवनु जान न जान्यौ तौ जान कहावत जान्यो कहा है।।

तुलसी का युग संक्रमण काल कहा जा सकता है। दो अलग-अलग संस्कृतियाँ हिंदू और मुसलमान (इस्लाम) आपस में टकरा रहीं थी। रोजगार के अवसर लगभग समाप्त हो गए थे। हिंदू जनता का शोषण इस्लाम शांसको द्वारा किया गया था। वर्तमान में गतिशील लोकतान्त्रिक प्रणाली और तुलसी युग का तुलनात्मक अध्ययन करें तो हमें ज्ञात होगा वहीं धर्म, जाति एवं रोजगार की समस्याएँ ज्यों की त्यों बनी हुई है। यथा-

"खेती न किसान को, भिखारीको न भीख, बलि,।

जीविका विहिन लोग सीदूयमान सोच बस,

कहैं एक एकन सो 'कहा जाई, का करी'?

विचार – विमर्श

तुलसीदास भारत के लोकप्रिय कवि हैं. उन्होंने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति के प्रेरक और उज्जवल पक्षों को प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत किया है. इस रूप में काव्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति के विभिन्न तत्वों को समझने की दृष्टि से तुलसी-काव्य सर्वाधिक समर्थ और सशक्त साधन है. हिन्दी और हिंदीतर अनेक विद्वानों द्वारा तुलसी-काव्य पर विचार, व्याख्या और विश्लेषण प्रस्तुत किये जा चुके हैं. तुलसी-काव्य के मर्म को समझने और समझाने की यह यात्रा निरंतर जारी है किन्तु यह भी सत्य है तुलसी-काव्य पर अभी तक जितना लिखा और कहा जा चुका है, वह अपर्याप्त है. "तुलसी की पहुँच घर-घर में है, या वे व्यापक समाज में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं तो इसका मुख्य कारण यह है कि गृहस्थ जीवन और आत्म निवेदन इन दोनों अनुभव-क्षेत्रों के वे बड़े कवि हैं. 'रामचरितमानस' और 'विनयपत्रिका' के युग्म में जैसे सब कुछ सिमट आया हो." (पृष्ठ-49, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी) वस्तुतः तुलसीदास के सम्पूर्ण कृतित्व में अब भी वह प्रेरक और सम्मोहिनी शक्ति विद्यमान है जो पहले लिखे और कहे गए से आगे बढ़कर सोचने और उसे अभिव्यक्त करने के लिए पाठकों और आलोचकों को निरंतर प्रेरित करते हुए सक्रिय बनाए रखे हुए है. निश्चित रूप से, तुलसीदास की काव्य-सरिता में ऐसे अनेक अमूल्य मोती छिपे हुए हैं जिनकी थाह मर्मज्ञ गोताखोर-मनीषियों को अभी तक नहीं लग सकी है. तुलसीदास के इसी गुण ने इतने वर्षों बाद भी भारतीय मानस-पटल पर अपना स्थान अक्षुण्ण रखा हुआ है. इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसीदास के विषय में बड़े आदर के साथ लिखा है - "यदि कोई पूछे कि जनता के हृदय पर सबसे अधिक विस्तृत अधिकार रखने वाला हिन्दी का सबसे बड़ा कवि कौन है तो उसका एक मात्र यही उत्तर ठीक हो सकता है कि भारत-हृदय, भारती-कंठ भक्त-चूडामणि गोस्वामी तुलसीदास." (पृष्ठ-175, गोस्वामी तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल)

आजकल आधुनिकता के नाम पर परम्परा को तोड़ने की प्रवृत्ति बलवती होती जा रही है किन्तु परम्परा में से ही आधुनिकता के अंकुर प्रस्फुटित होते हैं. इस सन्दर्भ में यह ध्यातव्य है कि तुलसीदास के 'रामचरित् मानस' का अवगाहन करके ही भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के मुख्य प्रेरक और प्रतिनिधि महात्मा गाँधी को 'रामराज्य' की अवधारणा और उसे स्थापित करने की प्रेरणा मिली थी. मध्यकाल में जब भारतीय संस्कृति संक्रमण और भटकाव के दौर में थी, तब अत्यंत आत्मविश्वास के साथ तुलसीदास ने ही भारतीय संस्कृति के मूल्यों को न केवल स्थापित किया बल्कि राम-कथा में उनके व्यावहारिक रूप को प्रदर्शित किया. तुलसीदास का यह महत् कार्य आधुनिक समय में भी मानव-संसृति को आचार, विचार और व्यवहार के स्तर पर लाभान्वित कर रहा है - "'सत्य मूल सब सुकृत

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

सुहाए' , 'धरम न दूसर सत्य समाना' , 'पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं' , 'उत्तर प्रति-उत्तर मैं कीन्हा' , 'नर तन सम नहिं कवनिउ देही' , 'जिन्हकें रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी, 'जौ अनीति कछु भाषौ भाई, तौ मोहि बरजहु भय बिसराई' जैसी उक्तियों के द्वारा तुलसी ने जिन मूल्यों को मध्यकाल में अपने काव्य में प्रतिष्ठापित किया था वे उन मूल्यों के काफी निकट हैं, जिन्हें आज का विज्ञान अपने विकास के लिए आवश्यक मानता है." [5,6]

वर्तमान समय की मानुषी प्रवृत्तियों को देखते हुए इसे उपभोक्तावादी संस्कृति प्रधान समय कहा जाता है जिसमें आत्मीयता, नैतिकता, मर्यादा, लोकमंगल आदि भारतीय संस्कृति के प्रधान मूल्यों का निरंतर क्षरण और हरण होता दिखाई दे रहा है. ऐसी विकट और विषम स्थिति में महाकवि तुलसीदास कृत साहित्य की प्रासंगिकता और ज्यादा बढ़ गयी है. 'रामचरित् मानस' में जिस प्रकार तुलसीदास ने महत् मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की है यदि वे आज के मनुष्य द्वारा अपना लिये जाएं तो वर्तमान जीवन की यांत्रिकता से बचते हुए जीवन का वास्तविक आनंद उठाया जा सकता है. मानव-जीवन संघर्षों की यात्रा है और इस यात्रा में आने वाले उतार-चढ़ाव ही मनुष्यता की कसौटी होते हैं जिनमें मानव-मन के विविध भाव, स्तर और संकल्प देखने को मिलते हैं - "मानव-प्रकृति के जितने अधिक रूपों के साथ गोस्वामीजी के हृदय का रागात्मक सामंजस्य हम देखते हैं, उतना अधिक हिन्दी भाषा के और किसी कवि के हृदय का नहीं. यदि कहीं सौन्दर्य है तो प्रफुल्लता, शक्ति है तो प्रणति, शील है तो हर्षपुलक, गुण है तो आदर, पाप है तो घृणा, अत्याचार है तो क्रोध, अलौकिकता है तो विस्मय, पाषंड है तो कुढन, शोक है तो करुणा, आनंदोत्सव है तो उल्लास, उपकार है तो कृतज्ञता, महत्त्व है तो दीनता तुलसीदासजी के हृदय में बिंब-प्रतिबिंब भाव से विद्यमान है." (पृष्ठ- 85, गोस्वामी तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल)

तुलसीदास लोकदृष्टा कवि होने के साथ ही दूरदृष्टा भी थे. उन्होंने अपने समय में मानव-धर्म की राह में आघात करने वाली प्रवृतियों का बड़ी सूक्ष्मता से अधययन किया और लोकमंगलकारी समाधान भी जनता के सामने प्रस्तुत किया. "ईश्वर में पूरी आस्था और मनुष्य का पूरा सम्मान ये दोनों दृष्टियाँ तुलसी में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं. 'सिया-राममय सब जग जानी। करहुँ प्रनाम जोरि जग पानी।' जैसी पंक्तियाँ इस गहरे आत्म-विश्वास पर ही लिखी जा सकती हैं, जहाँ ईश्वर और मनुष्य दोनों की एक साथ प्रतिष्ठा हो. 'सिया राम' यदि उनकी भक्ति के लिए आश्रय-स्थल हैं तो 'सब जग' उनके रचना-कर्म के लिए. ..... अनुभूति और अभिव्यक्ति का जैसा संश्लिष्ट रूप रचना में वस्तुतः प्रत्याशित है वह ईश्वर और मनुष्य की इस एकरूपता में से निकलता है." (पृष्ठ-49, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी)

तुलसीदास ने भक्ति को लोक-धर्म-सापेक्ष माना है. उन्हें ऐसी भक्ति से चिढ थी जो पाखण्ड और अनाधिकार चर्चा पर केन्द्रित हो. उन्होंने सच्चे मन से राम की सरला भक्ति को महत्त्व दिया. आज भारत में तथाकथित स्वयंभू धर्मगुरुओं की बाढ़-सी आ गयी है जिनके वाग्जाल में मनुष्य-जीवन भ्रमित ही हो रहा है. ऐसी स्थति में तुलसीदास-प्रतिपादित भक्ति सबसे पहले मनुष्य को उसकी मनुष्यता का अहसास करवाते हुए उसमें आत्मविश्वास भरकर 'राम' के सामने खड़ा करती है - "तुलसी की सबसे बड़ी विशेषता है – 'मनुष्य की उच्चता पर अखंड विश्वास' . इसीलिए ह्रासोन्मुख युग-जीवन के बीच उनहोंने दिव्य मानव-मूर्ति की प्रतिष्ठा की. इसीलिए वे मनुष्य, भगवान् और ब्रह्म में एकता स्थापित कर सके." (पृष्ठ-69, गोस्वामी तुलसीदास, डॉ. रामचंद्र तिवारी) इस रूप में भक्ति का पहला चरण मनुष्य को उसकी मनुष्यता का गहराई अहसास करना भक्ति का पहला चरण है.

आधुनिक समय के केंद्र में मनुष्य है और "आधुनिक दृष्टि परलोक की चिंता न कर इहलोक में, इसी जीवन को सुखी बनाने के लिए सतत संघर्ष की प्रेरणा देती है. मनुष्य के दुःख-कष्ट के लिए वह भाग्य को नहीं, अज्ञान एवं सामाजिक दुर्व्यवस्था को जिम्मेदार मानती है. तुलसी ने भाग्य और परलोक को स्वीकारते हुए भी उद्योग और इहलोक के महत्त्व को भली-भाँति प्रतिपादित किया है. सामाजिक दुर्व्यवस्था ..... रावणी अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष उन्हें भी अभीष्ट है. राम-रावण के युद्ध के माध्यम से उन्होंने बाहर और भीतर चलनेवाले शुभ और अशुभ के द्वंद्व में शुभ का समर्थक, राम का सैनिक बनने की जबरदस्त प्रेरणा दी है." (पृष्ठ-23, तुलसी के हिय हेरि, विष्णुकांत शास्त्री) इस दृष्टि से देखें तो आधुनिक जीवन की अनेक समस्याओं का निराकरण अकेले 'रामचरितमानस' के अवगाहन और कियान्वयन से स्वयंमेव हो जाता है.[4,5]

समय के प्रति निष्ठा और उसका सदुपयोग वर्तमान जीवन की सबसे बड़ी और अपरिहार्य आवश्यकता है. आज के आपाधापी और भाग-दौड़ से भरे जीवन में समय की कमी सभी को महसूस हो रही है. समय का सदुपयोग करते हुए कोई काम समय पर पूर्ण कर पाना आज सबसे बड़ी चुनौती है. 'टाइम मैनेजमेंट' को साध पाना सबके वश की बात नहीं रह गयी है जिसके कारण आज 'टाइम मैनेजमेंट' के गुरुओं की भी बाढ़-सी आ गयी है. तुलसीदास जी ने मध्य-काल में समय के इस महत्त्व को समझकर राम-कथा में इसे साधने के सूत्र भी दिए हैं – "तुलसीदास की मान्यता है, 'लाभ समय को पालिबो, हानि समय की चूक. सदा बिचारहिं चारुमति सुदिन, कुदिन, दिन दूक' सामर्थ्य रहते हुए भी ठीक समय पर ही ठीक काम करना चाहिए, तुलसी ने इस सिद्धांत की पुष्टि में श्री राम का उदाहरण देते हुए लिखा है, 'समरथ कोउ न राम सों तीय-हरण अपराधु, समयहि साधे काज सब समय सराहहिं साधू.' समग्र कल्प की दृष्टि से होगा सत्ययुग सर्वगुण-संपन्न युग, पर अपने छोटे-से जीवन में बीते हुए समय की तुलना में आनेवाला समय कितना अधिक

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

महत्त्वपूर्ण है, इसका संकेत देते हुए तुलसी ने कहा है, 'न करु बिलंब, बिचारु चारुमति बर्ष पाछिले सम गिलो पल' देर न कर, सुबुद्धि से सोच कि पिछले वर्षों के समान (मूल्यवान) है अगला पल. बचे हुए जीवन के एक-एक क्षण को इतना महत्त्व देना आज भी सुसंगत है." (पृष्ठ-25, तुलसी के हिय हेरि, विष्णुकांत शास्त्री)

तुलसीदास भारतीय जन-मानस की नब्ज को पकड़कर उसका सटीक उपचार बताने वाले रचनाकार हैं. भारत की जनता की जटिल संरचना में अनेक स्तरों पर विरोधाभास और द्वंद्व दिखलाई पड़ते हैं. यह स्थिति मध्यकाल में भी थी. उस समय तुलसीदास अपने काव्य के माध्यम से समन्वय का सिद्धांत लेकर आये और पारस्परिक विरोधी मतों और जीवन-दृष्टियों व शैलियों में समन्वय के द्वारा जीवन की समुचित दिशा निर्धारित करने का मन्त्र भारतीय जनता को दिया. आज का भारत अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है जिनमें अधिकांश का कारण अतिवादिता है. ऐसी स्थिति में यदि तुलसी की समन्वय-भावना को अपनाकर आगे बढ़ा जाय तो तनाव कुछ ढीला हो सकता है. इस सन्दर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है – "तुलसीदास को जो अभूतपूर्व सफलता मिली उसका कारण यह था कि वे समन्वय की विशाल बुद्धि को लेकर उत्पन्न हुए थे. भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धर्य लेकर सामने आया हो. ..... उन्हें लोक और शास्त्र दोनों का बहुत व्यापक ज्ञान प्राप्त था. ..... लोक और शास्त्र के इस व्यापक ज्ञान ने उन्हें अभूतपूर्व सफलता दी. उसमें केवल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है, वैराग्य और गार्हस्थ का, भक्ति और ज्ञान का, भाषा और संस्कृत का, निर्गुण और सगुण का, पुराण और काव्य का, भाववेग और अनासक्त चिंतन का, ब्राह्मण और चांडाल का, पंडित और अपंडित का समन्वय, रामचरितमानस के आदि और अंत दो छोरों पर जाने वाली पराकोटियों को मिलाने का प्रयास है. इस महान समन्वय का आधार उन्होंने रामचरित को चुना है. इससे अच्छा चुनाव हो भी नहीं सकता था."[3,4]

वर्तमान समय का भारत पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण की प्रवृत्ति से भी जकड़ा हुआ है. दूरद्रष्टा तुलसीदास की विवेकपूर्ण दृष्टि ने संस्कृति के इस संकट को अपने समय में भाँप लिया था. विचारवान तुलसीदास जी ने 'दोहावली' में लिखा है –

"मनि भाजन मधु, पारई पूरन अमी निहारि।

का छाड़ियँ, का संग्रहिय, कहहु बिबेक बिचारि।"

अर्थात् मणियों से बने बर्तन में भरी शराब के सामने मिट्टी की परई में भरे अमृत का त्याग उचित है? चकाचौंध के सामने त्याग और संग्रह का चयन विवेकपूर्ण विचार करते हुए होना चाहिए. कहना न होगा आज की भौतिकता प्रधान संस्कृति में तमाम तकनीकी सुविधाओं के संग्रह के बावजूद क्या मनुष्य जीवन का वास्तविक आनंद ले पा रहा है? - तुलसीदास जी ने इस प्रश्न को इतने वर्षों पहले अपने साहित्य में पाठकों को सचेत करते हुए उनके विचारार्थ रख दिया था. वर्तमान समय में भारतीयों की पाश्चात्य संस्कृति के पीछे लगी अंधी दौड़ के सन्दर्भ में इस प्रश्न की प्रश्नवाचकता कहीं गहरे अर्थ को व्यंजित करती है.

इस प्रकार कहा जा सकता है तुलसीदास को गए भले ही चार सौ से अधिक वर्ष हो गए हों किन्तु उनकी विविध काव्य-कृतियों में उपस्थित उनके विचारों को यदि पूर्वाग्रह से मुक्त होकर संतुलित दृष्टि रखते हुए परखा जाय तो वर्तमान समय और सन्दर्भों में उनकी उपयोगिता अवश्य समझ में आएगी. वस्तुतः "तुलसीदास की विचारधारा का विपुलांश आज भी वरणीय है. श्रीराम (सगुण या निर्गुण ब्रह्म, अवतार, विश्वरूप, चराचर व्यक्त जगत या चरम मूल्यों की समष्टि और स्रोत – उनका जो भी रूप आपकी भावना को ग्राह्य हो) के प्रति समर्पित, सेवाप्रधान, परहित-निरत, आधि-व्याधि-रहित जीवन; मन, वाणी और कर्म के एकता; उदार, परमत सहिष्णु, सत्यनिष्ठ, समन्वयी दृष्टि; अन्याय के प्रतिरोध के लिए वज्र-कठोर, प्रेम-करुणा के लिए कुसुम कोमल चित्त; गिरे हों को उठने, और बढ़ने की प्रेरणा और आश्वासन; भोग की तुलना में तप को प्रधानता देनेवाला, विवेकपूर्ण, संयत आचरण; दारिद्यमुक्त, सुखी, सुशिक्षित, समृद्ध, समतायुक्त समाज; साधुमत और लोकमत का समादर करनेवाला प्रजा-हितैषी शासन – संक्षेप में यही आदर्श प्रस्तुत किया है तुलसी की 'मंगल करनि, कलिमल हरनी' वाणी ने." (पृष्ठ-29, तुलसी के हिय हेरि, विष्णुकांत शास्त्री) इस रूप में तुलसीदास द्वारा वर्णित मंगल भावना को अपनाकर वर्तमान समय और जीवन के विभिन्न तनावों, विषमताओं और समस्याओं को न केवल दूर किया जा सकता है बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी दिशा-निर्देशित किया जा सकता है.[2,3]

परिणाम

आधुनातन संदर्भ में कुछ प्रश्न हमारे सामने हमेशा आ खड़े होते हैं कि क्या आज के इस आधुनिकतावादी दौर में हमारा धर्म हमारा आध्यात्म हमारी आस्था कहीं टिक पाएंगी। वर्तमान की जो स्थिति बाजारवाद ने उत्पन्न की हैं उससे भौतिकतवाद का अंधड़ आया है उसने हमारे देश की आस्था और विश्वास को हिलाकर दख दिया है। आज हम जिस दोराहे पर खड़े हैं] वहाँ से आगे अगर सिर्फ हमें कुछ दिखाई पड़ता है तो वह है अंधविश्वास] अनास्था] आशंका] अधंकार] अनिश्चितता] और किंकर्तव्यवमूढ़ता। इसका एक कारण आज का भौतिकवादी जीवन और हितसाधन की होड़ में बड़ते दुनिया के लोगों के कदम। भारतीय मानस आज इस कदर से द्वन्द्व का

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

जीवन जी रहा है, जिसमें उसे दूसरों के लिए तो छोड़ो अपने लिए ही सोचने का अवकाश नहीं है। ऐसे समय हमेशा हमारा सहारा साहित्य ही बना है, जो हमें रास्ता दिखाता है। हमें भी एक ऐसे साहित्य की आवश्यकता हमेशा महसूस होती है जो हमें इस स्थिति से उबार सके और त्याग] बलिदान] आशा] उम्मीद] करूणा] दया तथा कर्तव्य परायणता की ओर बलवती कर सके। जब हम सोचते हैं कि आखिर ऐसा क्या पढ़ा जाए जिसमें जीवन के सारे प्रश्नों के समाधान उपलब्ध हों, वो कौन सा साहित्य है जो इस बाजारवाद के युग में भी अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रहा है तो हमारे सामने हमेशा तुलसी साहित्य अग्रिम पंक्ति में खड़ा हुआ दिखाई देता है। लड़खड़ाती आस्था और चलायमान निष्ठा के इस उपयोगितावादी, अर्थप्रधान अराजक हो रहे युग में किसी को भी बिना विचारे जो मन आए कह देने का फैशन हो गया है। इसके पीछे समाचार पत्रों की सुर्खियों में आना और स्वयं को क्रान्तिकारी दिखाना भी होता है चाहे चिन्तन कितना ही सतही हो। गोस्वामी तुलसीदास जी न इसके अपवाद हैं न उनके आराध्य भगवान राम। इनके जन्म-स्थान आदि के बारे में तो विवाद न जाने कब से चल रहे हैं पर उनकी प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न कुछ नये हैं विशेषकर उन लोगों द्वारा जिनका गोस्वामी जी ने बातुल भूति बिबस मतवारे जे नहिं बोलहिं बचन सँभारे कहा था।

चाहे कोई भी रचनाकार हो अगर उसकी रचना प्रत्येक काल में अपनी सार्थकता सिद्ध करती हैं और उसकी उपयोगिता हमेशा बनी रहती है तो वह रचना और रचनाकार दोनों ही कालजयी हो जाएँगे। प्रत्येक रचनाकार की प्रासंगिकता को उसके साहित्य में आये पात्रों] चरित्रों] संवादों] उक्तियों] चिंतनों] नीतियों और दर्शन के विविध पक्षों के आधार पर परखा जा सकता है। पुराण पुरुषों को युगीन परिस्थितियों के अनुसार समाज का पथ-प्रदर्शन करते रहना पड़ता है। पौराणिक महानायकों के चरित्र इसीलिए पढ़े जाते हैं और बार-बार रचनाओं के विषय बनाए जाते हैं। राम और कृष्ण जैसे महानायकों का वर्चस्व इसी कारण से बना हुआ है कि वे मानवता के उद्धारक के रूप में आज भी समाज के अनुकरणीय आदर्श बने हुए हैं। उन्होंने एक ऐसा आदर्श] ऐक ऐसा उदाहरण समाज के सामने प्रस्तुत किया जिससे समाज अपना पथ प्रदर्शन कर सके तथा एक आदर्श समाज की स्थापना हो सके-

तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहु ओर।

अनहोनी होनी नहीं होनी हो सो होय।।

तुलसी एक ऐसे रचनाकार हैं जिनकी प्रासंगिकता हमेशा बरकरार रहेगी। तुलसी के राम उनकी रामचरितमानस और उस मानस के पात्र हमेशा कालजयी और प्रासंगिक रहेंगे। जब तक इस संसार रावणत्त्व शेष रहेगा] तब तक राम की आवश्यकता का अनुभव किया जाएगा] जब तक राम की आवश्यकता का अनुभव किया जाए तब तब उनके अनन्य भक्त तुलसी प्रासंगिक बने रहेंगे।[1,2]

आज की सबसे भीषण और गंभीर समस्या साम्प्रदायिकतावाद है] साम्प्रदायिकता की चादर और आज का जनमानस के हृदय में धर्म के नाम एक गहरी खाई उत्पन्न हो रही है। हिन्दू-मुस्लिम प्रशंग तो आज का विशेष मुद्दा है। कुल मिलाकर साम्प्रादायिकता आज भी भीषण समस्या है। वह किस प्रकार बलवती होती है] यह जानना हो तो परशुराम का प्रसंग लें। परशुराम भी विष्णु के अवतार थे] एकान्त शौर्य के ऐसे प्रतिमान] जिनकी जोड़ शायद ही कहीं मिले। वे चाहते तो रावण को रोक सकते थे] उसकी अनीति पर अंकुश लगा सकते थे] पर दोनों एक ही सम्प्रदाय (शैव) के थे] अतः रावण की अनदेखी करते गए। साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले आज भी उससे निबट नहीं पर रहे हैं। जब तक साम्प्रदायिकता का विष विश्व को दग्ध करता रहेगा, विश्व-शान्ति को बन्धक बनाए रखेगा, तब तक तुलसी प्रासंगिक बने रहेंगे। तुलसीदास सबसे भाई-चारा रखने के लिए कहते है-

तुलसी इस संसार में भांति-भांति के लोग।

सबसे हस मिल बोलिए, नदी नाव संजोग

परशुराम-प्रसंग राम के चरित्र, उनके आचार-विचार] उनकी व्यवहार-कुशलता एवं उनकी मर्यादा की भी सबसे वड़ी कसौटी है। यहाँ उनके विरोध में खड़े हैं उनके पूर्व के अवतारपुरुष भृगुवंशी परशुराम, जिनकी सात्त्विक अहम्मन्यता उनकी शक्ति भी है और उनके अवतारी स्वरूप की परिसीमा भी। राम यहाँ भी अपनी मर्यादा से विचलित नहीं होते। वे 'हृदय न हरसु विषाद कछु ' के अपने समत्वभाव को बिना त्यागे विनम्र और शिष्ट-शालीन बने रहते हैं। वे उन्हें 'समसील धीर मुनि ज्ञानी ' कहते हुए-

राम मात्र लघु नाम हमारा । परसु सहित बड़ नाम तुम्हारा ।।

देव एक गुन धनुष हमारे । नवगुन परम पुनीत तुम्हारे ।।

सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे । छमहु बिप्र अपराध हमारे ।।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

आदि कहकर एक ओर अपने मर्यादित व्यवहार की बानगी देते हैं, तो दूसरी ओर परशुराम के आत्मविश्वास एवं अहंकार को भी क्षीण करते हैं।

गोस्वामी जी ने वर्तमान संदर्भ को परिलक्षित करके 'जौ अनीति कछु भाखौ भाई, तौ मोहि बरजहु भय बिसराई ' राम से कहलाकर तुलसीदास जी ने लोकतंत्र की आधारशिला को पारिभाषित किया है। आज के लोकतंत्र की सबसे बुनियादी आवश्यकता है तो वह है निर्भयता बिना इसके चल ही नहीं सकता यह लोकतंत्र की आधारशिला है। रामराज में उनके अधीनस्थों को जितनी स्वच्छंदता थी उतनी आज तक और कोई भी नहीं दे पाया, बल्कि वर्तमान के इस मिरेकल और पारदर्शी युग में शासक को संविधान और न्यायालयों की पकड़ से बाहर रखने का क्या निहितार्थ है, यह और बात है कि इतनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग भी हुआ। सीता के द्वितीय बनवास के मूल में वाणी की स्वतंत्रता ही थी। प्रजानुरंजनार्थ राम ने उसे भी स्वीकारा] पर सियनिन्दकों को दण्डित करना दूर भला-बुरा भी नहीं कहा। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर राजधर्म निभाया, स्वयं दुःखी होकर भी प्रजा की माँग का अनुमोदन किया। इसका अभिप्राय यह भी है कि कुछ स्वनिर्मित सीमायें रहें ताकि सभी प्रसन्न रह सकें। राम के अपार गुण आज के जनमानस को वैश्विक सुन्दरता की ओर ले जा सकते हैं-

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।

बल बिवेक दम परहित घोरे। क्षमा कृपा समता रजु जोरे।।

ईसभजनु सारथी सुजाना। बिरति धम्र संतोष कृपाना।।

दान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा। बर बिज्ञान कठिन कोदंडा।।

अगम अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुं रिपु ताकें।

पदलोलुप सत्तासीन पुरुषों का स्वार्थ आज बहुत घातक हो रहा है] और यह स्वार्थ और कितना घातक हो सकता है, अगर में हमें यह जानना है तो हमें रामचरित मानस का प्रतापभानु प्रसंग पढ़ना चाहिए। वे एक ऐसे उच्चकोटि के श्रेष्ठ सम्राट तो थे ही साथ वे अत्यन्त धर्मनिष्ठ और धर्मात्म स्वरूप से आवृत व्यक्तित्व के धनी थे, पर कपटी मुनि द्वारा वरदान माँगने को कहे जाने पर उन्होंने न राज्य के लिए कुछ माँगा न परिजनों अथवा पुरजनों के लिए। माँगा तो केवल अपने लिए-जरा भरन दुखरहित तनु समर जितै जनि कोइ। एक छत्र रिपुहीन महि राजु कलप सतहोइ।। 'इसका परिणाम भी तत्कार मिल गया वे समूल नष्ट हो गए। जब तक शासक अपनी हित-साधना में लगे रहेगे तब तक तुलसी की प्रासंगिकता बनी रहेगी।[1]

नौकरशाही युग के समर्थ और सक्षम अधिकारी आज अपने सुविधाभोगी जीवन के चक्कर मे किस तरह देश को बर्बाद करने में जुटे हैं उसको वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जानने के लिए हमें कुम्भकर्ण के उदाहरण को लेना पड़ेगा। रावण का अगर कोई विश्वासपात्र सेनापति था तो वह था कुम्भकर्ण। अगर कुम्भकरण चाहता तो रावण को पथ-भ्रष्ट होने और उसकी स्वेच्छाचारिता को सीमातीत होने से रोक सकते थे पर उन्हें सोने से फुरसत ही कहाँ थी। रावण के द्वारा सीता हरण की सूचना दिये जाने पर उनका व्यथापूर्ण उद्गार-'अहह बंधु तैं कीन्हि खोटाई प्रथमहिं मोकि न जनाएसि आई '-यही तो है कि पहले बताया जाता तो वे उसको रोकते। जब तक सेनापति अपने कर्तव्य से विमुख होकर सुख की नींद सोते रहेंगे तक तुलसी प्रासंगिक बने रहेंगे।

इसके अलावा भाइयों की मर्यादा, उनके सम्मान की रक्षा राम ने जिस प्रीतिभाव से की है वह अनुकरणीय है। चित्रकूट में भरत के अयोध्या वापस लौट चलने के अनुरोध को वे अपनी सहज मर्यादा से ही साधते हैं। उस प्रसंग में राम-भरत वार्तालाप 'सत्यं प्रिय हितं च यत ' की शास्त्रोक्त वार्तालाप शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके साथ ही भरत का चरित्र भी तो बहुत ही अद्भुत शक्ति से परिपूर्ण है। उनका दिए हुए राज्य को भी स्वीकार न करना तुलसी के समकालीन शासकों के मुॅंह पर एक तमाचा था जो अपने अत्यन्त निकटस्थों तक की हत्या करके राज्यासीन हो रहे थे। भरत का अवदान त्याग तक ही सीमित नहीं था उनका शौर्य और राजगता भी अद्वितीय है। हनुमान द्रोणगिरि को लिए हुए हिमालय से लंका तक गए, पर मध्य रात्रि के उस घनघोर अन्धकार में भी वे भरत की सजगता को चकमा नहीं दे सके, जबकि उस पूरे सैकड़ों योजन लम्बे मार्ग में किसी और को पता ही नहीं लगा। रावण की सारी गुप्तचर व्यवस्था कालनेमि के भरोे से निश्चित बैठी रही। जब तक भरत जैसे सजग प्रहरी की आवश्यकता अनुभव की जाएगी, तब तक तुलसी प्रासंगिक बने रहेंगे।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412024 |

प्रतीकात्मक अर्थ में दशरथ और कैकेयी को लें तो जब तक बूढ़े (अशक्त) शासक कैकेयी (दुव्यवस्था) के चंगुल में फँसे रहेंगे, तब तक तुलसी प्रासंगिक बने रहेंगे। जामवन्त और हनुमान का प्रसंग लें तो जब तक पुरानी पीढ़ी (जामवन्त) नयी पीढ़ी (हनुमान) को जगाने का काम करती रहेगी और नयी पीढ़ी उसके बताए मार्ग पर चलने की इच्छुक रहेगी, तब तक तुलसी प्रासंगिक बने रहेंगे।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि तुलसी का पात्र एवं कथानक-चयन सोद्देश्य है। एक आदर्श राज्य क्या होता है, सर्वश्रेष्ठ गुणवान राजा कौन हो सकता है, इसके अलावा श्रेष्ठ प्रजा] श्रेष्ठ भाई] पत्नी पिता] पुत्र आदि सभी रिस्ते-नाते कैसे होने चाहिए इन सबकी सुन्दर प्रस्तुती तुलसी साहित्य बड़े ही व्यावहारिक ढंग से व्यक्त करता है] साथ तुलसीदास के साहित्य का ध्येय एक ऐसे मानवतावादी साहित्य की स्थापना हमेशा रहा जो अपने मानवीय मूल्यों पर आधारित हो। नैतिक मूल्यों की आवश्यकता हमेशा और हर युग मे रहती है] और इन नैतिक मूल्यों की स्थापना करता हुआ तुलसी का साहित्य साहित्य के मोर मुकुट के रूप में हमारे समक्ष इस युग में ही नहीं अपितु प्रत्येग युग में उपस्थित होता नजर आएगा। और उसमें अन्तर्निहित उनके मानवतावादी उद्देश्य उन्हें सदैव प्रासंगिक बनाए रखेंगे। तुलसीदास दूसरे के हित से बढ़कर कोई हित नहीं मानते थे-'परहित सरिस धर्म नहीं भाई अपने निज हित को छोड़कर दूसरे के हित से बढ़कर कोई धर्म न मानने वाला तो कोई महात्मा ही हो सकता है] ऐसे महात्मा तुलसीदास को हमारा युग-युगान्तर तक नमन] अस्तु।[2]

निष्कर्ष

अन्त में तुलसी साहित्य की सांस्कृतिक महत्ता पर प्रकाश डालते हुये बरबस पं. रामनरेश त्रिपाठी के उस उद्धरण की याद आ जाती है, जहाँ वे कहते हैं कि - "तुलसी का संस्कृत के सैकड़ों ग्रन्थों के लाखों श्लोकों पर एकमात्र सम्राट की तरह अधिकार था। वे जिसे जहाँ चाहते थे, वहाँ नियुक्त कर देते थे।' ' viii अर्थात् संस्कृत की समूची ज्ञान-परम्परा से सम्पूर्ण हिन्दी जगत को परिचित व निमज्जित कराने के कारण तुलसीदास न केवल तत्कालीन जनमानस में लोकप्रिय रहे वरन् हमारी आने वाली नस्लों के लिए भी प्रेरणा बन गये।

इसलिए तुलसी साहित्य से बिछड़ना अपनी जड़ों से कटना है, इसमें हिन्दी, संस्कृत, ब्रज, अवधी के साथ भारतीय सभ्यता व संस्कृति की जाने कितनी झलकें एक साथ संगुफित हैं। अस्तु हम कह सकते हैं कि जब तक विश्व में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का मान रहेगा तब तक तुलसी की प्रासंगिकता अक्षुण्ण रहेगी।[6]

संदर्भ

1. तुलसीदास. 1999. विनयपत्रिका, हरितोषिणी टीका सहित, छठवाँ संस्करण. संपादक: वियोगी हरि, नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन.
2. तुलसीदास. 2065 संवत्. रामचरित मानस, सत्रहवाँ संस्करण. गोरखपुर: गीता प्रेस.
3. तुलसीदास. 2068 संवत्. हनुमानबाहुक, इक्यासीवाँ संस्करण. गोरखपुर: गीता प्रेस.
4. त्रिपाठी, राम नरेश. 1951. तुलसीदास और उनका काव्य. दिल्ली: राजपाल एंड संस.
5. मेघ, रमेश कुंतल. 1973. तुलसी आधुनिक वातायन. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन.
6. शर्मा, राम विलास. 2001. भारतीय सौदंर्यबोध और तुलसीदास, पहला संस्करण. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 | 9710 583 466 | ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com